2. हिन्दी एकांकी का सामान्य परिचय दीजिए? (15)

**अथवा**

हिन्दी निबंध कि विकास यात्रा बताइए?

3. 'उसने कहा था' कहानी में वर्णित प्रेम का स्वरूप स्पष्ट कीजिए? (15)

**अथवा**

'चीफ़ की दावत' कहानी में माँ - पुत्र के संबंध की विशेषताएँ लिखिए?

4. 'एक दुराशा' निबंध में वर्णित भारतीय जन-जीवन का उल्लेख कीजिए? (15)

**अथवा**

'मज़दूरी और प्रेम' नामक निबंध की समीक्षा लिखिए?

5. 'बिबिया' की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए? (15)

**अथवा**

एकांकी 'सूखी डाली' में वर्णित परिवार की विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए?

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(क) हिन्दी कहानी।

(ख) निबंध 'एक दुराशा' में हास्य व्यंग्य।

RAMANUJAN COLLEGE
Kalkaji, New Delhi-110019



[This question paper contains 4 printed pages.]

**Your Roll No.....**

**Sr. No. of Question Paper : 4731** **J**

Unique Paper Code : 2055092002

Name of the Paper : हिन्दी गद्य: विकास के विविध चरण (ख)

Name of the Course : **B.Com. (P) GE Hindi**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

**छात्रों के लिए निर्देश**

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित में से **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) बड़े-बड़े शहरों के इक्के - गाड़ीवालों को जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है और पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बंबू-कार्टवालों की बोली का मरहम लगावें। जब बड़े-बड़े शहरों कि चौड़ी सड़कों पर घोड़े कि पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्के वाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट

का सम्बन्ध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अँगुलियों के पोरों को चीथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं। और संसार की ग्लानि, निराशा और क्षोभके अवतार बने, नाक की सीध चले जाते हैं।

**अथवा**

बरामदे में पहँचते ही शामनाथ सहसा ठिठक गए। जो दृश्य उन्होंने देखा, उससे उनकी टाँगे लड़खड़ा गई, और क्षण भर में सारा नशा हिरण होने लगा। बरामदे में ऐन कोठरी के सामने माँ अपनी कुर्सी पर ज्यों की त्यों बैठी थीं। मगर दोनों पाँव कुर्सी की सीट पर रखे हुए और सिर दाएँ से बाएँ और बाएँ से दाएँ झूल रहा था और मुँह से लगातार ख़र्राटों की आवाज़ें आ रही थी।

(ख) बालू में बिखरी हुई चीनी को हाथी अपने सूंड से नहीं उठा सकता, उसके लिए चिवटी की जिह्वा की दरकार है। इसी कलकत्ते में इसी इमारतों के नगर में माई की प्रजा में हजारों आदमी ऐसे हैं, जिनको रहन को सड़ा झोपड़ा भी नहीं है। गलियों और सड़कों पर घूमते-घूमते जहाँ जगह देखते हैं. वहीं पड़े रहते हैं। पहरेवाला आकर डण्डा लगाता है तो सरक कर दूसरी जगह जा पड़ते हैं। बीमार हैं तो सड़कों ही पर पड़े पांव पीटकर मर जाते हैं। कभी आग जलाकर खुले मैदान में पड़े रहते हैं।

**अथवा**



मेरा विश्वास है कि जिस वस्तु में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं, उसमें उसके हृदय का प्रेम और उसकी पवित्रता सूक्ष्म रूप से मिल जाती है और उसमें मुर्दे को ज़िंदा करने की शक्ति आ जाती है। होटल में बने हुए भोजन यहाँ नीरस होते हैं, क्योंकि वहाँ मनुष्य मशीन बना दिया जाता है। परन्तु अपनी प्रियतमा के हाथ से बने हुए रूखे सूखे भोजन में कितना रस होता है। जिस मिट्टी के घड़े को कन्धों पर उठाकर, मीलों दूर से उसमें मेरी प्रेममग्न प्रियतमा ठंडा जल भर लाती है; उस लाल घड़े का जल जब मैं पीता हूँ तब जल क्या पीता हूँ, अपनी प्रेयसी के प्रेमामृत को पान करता हूँ।

(ग) आत्मघात, मनुष्य की जीवन से पराजित होने की स्वीकृति है। बिबिया- जैसे स्वभाव के व्यक्ति पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करते। कौन कह सकता है कि उसने सब ओर से निराश होकर अपनी अन्तिम पराजय को भूलने के लिए ही यह आयोजन नहीं किया? संसार ने उसे निर्वासित कर दिया, इसे स्वीकार करके और गरजती हुई तरंगों के सामने आँचल फैलाकर क्या वह अभिमानिनी स्थान की याचना कर सकती थी?

**अथवा**

मंझली बहू, तुम अपनी हँसी को उन लोगों तक ही सीमित रखो बेटा, जो उसे सहन कर सकते हैं। बाहर के लोगों पर घर में बैठकर हँसा जा सकता है, किन्तु घर के लोगों को तब तक हँसी का निशाना बनाना ठीक नहीं, जब तक वे पूर्णतया घर का अंग न बन जाएँ और इन्दु बेटा, तेरी छोटी भाभी बुद्धिमती, सुशिक्षित और सुसंस्कृत है; तुझे उसकी हँसी उड़ाने, उससे लड़ने-झगड़ने के बदले उसका आदर करना चाहिए, उससे ज्ञानार्जन करना चाहिए।